

अध्याय 12

राज्य आय

(अ) अर्थ

राज्य आय का अर्थ किसी राज्य की एक वर्ष की अवधि में पैदा की गई कुल घरेलू उत्पाद से है। ऐसा करने के लिए हिमाचल प्रदेश की सीमाओं में रहने वाले सभी व्यक्तियों द्वारा पैदा की गई सभी वस्तुओं व सेवाओं का योग किया जाता है। परन्तु सभी वस्तुओं व सेवाओं का योग कैसे किया जाये ? ऐसा करने के लिए सभी वस्तुओं व सेवाओं का मौद्रिक मूल्य (रुपयों में मूल्य) का योग करते हैं।

(ब) आधार वर्ष

वस्तुओं का मूल्य बदलता रहता है। अतः एक विशेष अवधि अर्थात् दस वर्ष या कुछ कम-बढ़ अवधि में सकल घरेलू उत्पाद की तुलना को आसान बनाने के लिए आधार वर्ष का चुनाव किया जाता है। आधार वर्ष की कीमतों के आधार पर वस्तुओं व सेवाओं के मूल्य का योग किया जाता है। प्रारम्भ में 1950-51 की कीमतों को आधार मान कर कुल घरेलू उत्पाद की गणना की गई। ऐसा 1965-66 तक की गणना के लिए किया गया। इस समय कीमतें इतनी बढ़ गई थी कि 1950-51 की कीमतों का कोई अर्थ नहीं रह गया है। अतः 1967-1970 के बीच 1960-61 को आधार वर्ष मानकर राज्य आय की गणना की गई। 1971 से 1985 तक 1970-71 की कीमतों को आधार वर्ष माना गया। 1986 से आज तक 1980-81 की कीमतों को आधार वर्ष माना गया है।

(स) गणना कौन करता है ?

राज्य आय की गणना राज्य का सांख्यिकी निदेशालय करता है। सारे देश में यह गणना एक समान आधार पर हो, इसके लिए केन्द्रीय सरकार का सांख्यिकी विभाग नियम व विधि तैयार करता है।

(द) महत्व

एक प्रश्न सहज उठता है कि राज्य आय की गणना क्यों की जाये ? इससे क्या लाभ होता है ?

- (i) राज्य आय किसी भी राज्य के आर्थिक विकास का सर्वोत्तम मापदण्ड है।
- (ii) इससे राज्य की आय एवं आय प्राप्त करने के स्रोतों का ज्ञान होता है।
- (iii) विभिन्न वर्षों की आय की तुलना से आर्थिक विकास की गति का पता चलता है। आर्थिक क्रियाओं से आय की तुलना आर्थिक दिशा की ओर इशारा करती है।
- (iv) इन आंकड़ों की मदद से योजना बनाने में मदद मिलती है।
- (v) आर्थिक विकास को गति एवं दिशा दी जा सकती है तथा विसंगतियों को दूर किया जा सकता है।

(2) हिमाचल प्रदेश की राज्य आय

सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि

हिमाचल प्रदेश का कुल (सकल) घरेलू उत्पाद 1950-51 में 26 करोड़ रुपये था जो 1990-91 में बढ़कर लगभग 1111 करोड़ रुपये हो गया। विभिन्न अवधियों में कुल घरेलू उत्पाद को निम्नलिखित सारणी में दिखाया गया है।

क्र.सं०	वर्ष	सकल घरेलू उत्पाद (करोड़ रु० में)
1.	1950-51	26.00
2.	1965-66	40.00
3.	1971-72	232.00
4.	1981-82	302.00
5.	1990-91	1111.00

स्रोत : अर्थ व सांख्यिकी निदेशालय, हि.प्र.

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि हिमाचल प्रदेश की कुल घरेलू उत्पाद में तेज गति से वृद्धि हुई है। परन्तु आधार वर्ष बदलते रहने से इतनी अधिक वृद्धि दिखाई देती है। अतः यह आर्थिक विकास को सही तस्वीर प्रकट नहीं करती।

प्रतिशत वृद्धि : सकल घरेलू उत्पाद की अधिक सही तस्वीर प्रतिशत वृद्धि से ज्ञात की जा सकती है। 1951 से 1990 के बीच औसत वृद्धि की दर 3.4 प्रतिशत प्रतिवर्ष रही है। 1981-90 के दस वर्षों में वृद्धि की दर सबसे अधिक 5.1 प्रतिशत थी। वास्तव में आर्थिक विकास की वृद्धि की दर कृषि व बिजली की पैदावार पर निर्भर रहती है। इनका उत्पादन बढ़ जाने पर वृद्धि की दर कम हो जाती है। वर्ष 1990-91 में यह लगभग 3.4 प्रतिशत थी।

(3) प्रति व्यक्ति आय

एक व्यक्ति की औसत आय को प्रति व्यक्ति आय कहा जाता है। इनकी गणना करनेके लिए राज्य की कुल आय को राज्य की कुल जनसंख्या से विभाजित कर देते हैं।

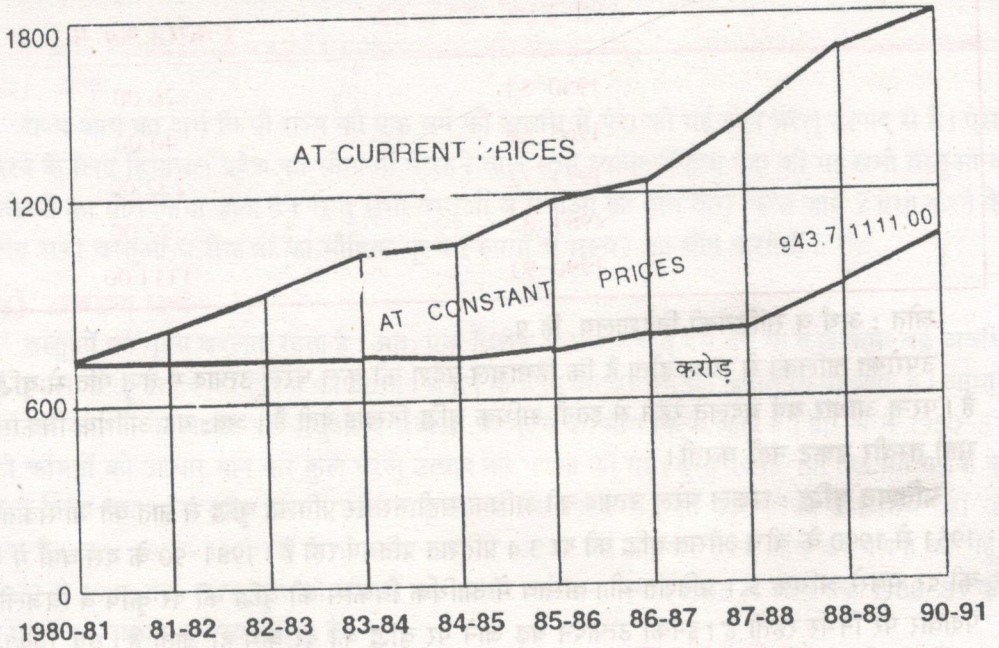
$$\text{प्रति व्यक्ति आय} = \frac{\text{राज्य की कुल आय}}{\text{राज्य की कुल जनसंख्या}}$$

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि यदि जनसंख्या में वृद्धि न हो और राज्य की कुल आय बढ़ जाए तो प्रति व्यक्ति आय बढ़ जायेगी। दूसरी तरफ यदि कुल आय की तुलना में कुल जनसंख्या में प्रतिशत वृद्धि अधिक हो तो प्रति व्यक्ति आय कम भी हो सकती है।

हिमाचल प्रदेश की प्रति व्यक्ति आय 1950-51 में 240 रु० थी। 1990-91 में बढ़कर 4813 रु० हो गई। यहां भी यह स्मरण रखना होगा कि आधार वर्ष के बदले जाने से आय में इतना अधिक अन्तर नजर आता है। यहां भी प्रतिशत वृद्धि अधिक सही स्थिति बता सकती है। 1951 से 1966 के बीच औसत प्रति व्यक्ति आय में कोई भी वृद्धि नहीं हुई। 1970-80 के बीच प्रतिशत वृद्धि नकारात्मक रही। 1980-90 के बीच कृषि पैदावार व जल-विद्युत पैदावार में वृद्धि होने से प्रतिशत आय का प्रतिशत भी बढ़ा।

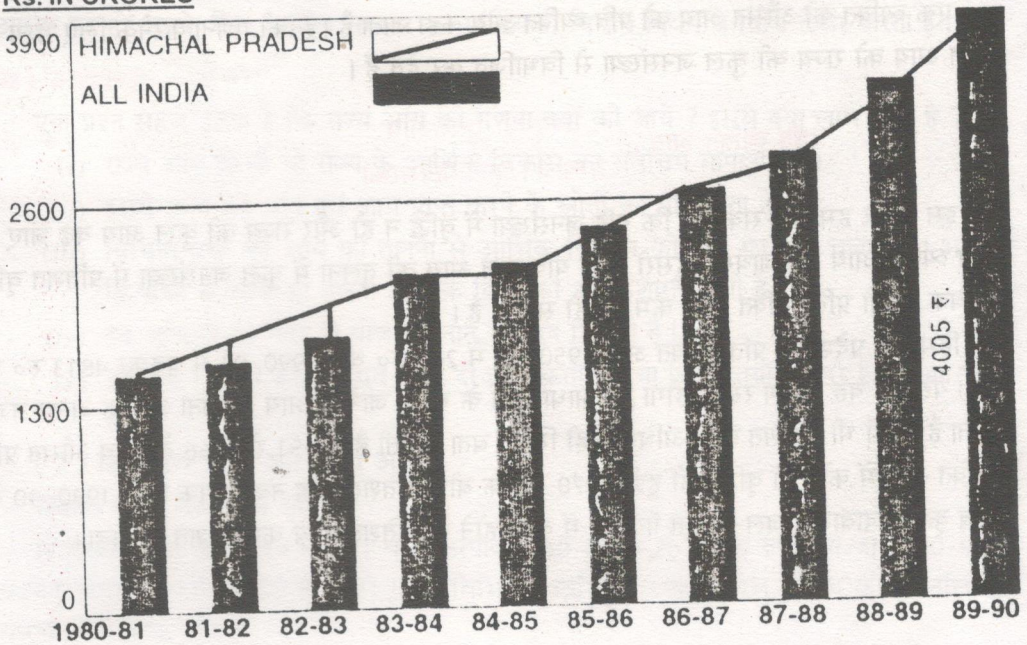
राज्य आय

Rs. IN CRORES



प्रति व्यक्ति आय (चालू कीमतों पर)

Rs. IN CRORES



प्रति व्यक्ति आय की तुलना : हिमाचल प्रदेश में प्रति व्यक्ति आय सारे भारत की औसत प्रति व्यक्ति आय के लगभग बराबर है। परन्तु सिर्फ 4-5 राज्य के लोगों की प्रति व्यक्ति आय ही हिमाचल से अधिक थी। शेष राज्यों के लोगों की प्रति व्यक्ति आय से हिमाचल की प्रति व्यक्ति आय अधिक थी। इसे निम्न तालिका में दिखाया गया है।

तुलना का वर्ष 1989-1990 (चालू कीमतों पर)

क्र. सं०	नाम	राज्य आय (रु० में)	चालू कीमतों पर
1.	सारा भारत	4252	4974
2.	हिमाचल	4005	4813
3.	गुजरात	5404	
4.	महाराष्ट्र	6184	
5.	पंजाब	7081	
6.	हरियाणा	6265	

स्रोत : अर्थ व सांख्यिकी निदेशालय हि०प्र०

(4) आर्थिक क्रियाओं का वर्गीकरण

- (1) प्राथमिक क्षेत्र :- इसमें कृषि, पशुपालन, वानिकी, मत्स्य, व खनन को शामिल किया जाता है।
 (2) द्वितीय क्षेत्र :- इसमें उद्योग, निर्माण, बिजली, गैस क्रियाओं को शामिल किया जाता है।
 (3) तृतीय क्षेत्र :- इसमें परिवहन सेवा, संचार सेवा, बीमा सेवा, व्यापार, वाणिज्य, बैंकिंग सामुदायिक व वैयक्तिक सेवाओं को शामिल किया जाता है।

एक पिछड़े राज्य में आय का प्रमुख स्रोत प्राथमिक क्रियायें होती हैं। जैसे-जैसे आर्थिक विकास बढ़ता जाता है प्राथमिक क्षेत्र का अंशदान कम होता जाता है और द्वितीय व तृतीय क्षेत्र के अंशदान में वृद्धि होती जाती है। प्राथमिक क्षेत्र में मुख्य कृषि पर मौसम का अभाव अधिक होने से आय में ज़राब उतार-चढ़ाव आते रहते हैं।

हिमाचल प्रदेश की स्थिति :- हिमाचल प्रदेश के सन्दर्भ में राज्य आय में विभिन्न क्षेत्रों का अंशदान निम्न तालिका में दिखाया गया है।

राज्य आय : विभिन्न क्षेत्रों का अंशदान

वर्ष	1970-71	1979-80	1989-90	1990-91	सातवीं योजना में विकास दर
प्राथमिक क्षेत्र	57.17%	49.19%	40.76%	39.87%	7.7
द्वितीय क्षेत्र	16.88%	18.70%	21.38%	22.83%	8.6
तृतीय क्षेत्र	25.95%	32.11%	37.86%	37.30%	7.2
योग	100%	100.00	100.00	100.00	

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि राज्य आय में प्राथमिक क्षेत्र का योगदान लगातार कम हो रहा है जो 1970 में 57 प्रतिशत से कम होकर 1991 में लगभग 40 प्रतिशत ही रह गया। इसके विपरीत द्वितीयक क्षेत्र में वृद्धि 8.6% रही व इसका अंशदान 16.88 प्रतिशत से बढ़कर 22.83 प्रतिशत हो गया। द्वितीयक क्षेत्र में वृद्धि सीमेंट के कारखानों में उत्पादन होने तथा विद्युत परियोजनाओं के पूर्ण होने के कारण हुई। इसी प्रकार तृतीयक क्षेत्र का अंशदान लगभग 26 प्रतिशत से बढ़कर लगभग 37 प्रतिशत हो गया। औसत वृद्धि 7.2 प्रतिशत हुई। इस क्षेत्र में मुख्य वृद्धि सामुदायिक व वैयक्तिक सेवाओं के क्षेत्र में हुई।

उपरोक्त परिवर्तन यह इशारा करता है कि हमारी कृषि पर निर्भरता धीरे-धीरे कम हो रही है तथा उद्योग व व्यापार शनैः शनैः उन्नति कर रहा है।

अभ्यास-प्रश्न

निबन्धात्मक प्रश्न

1. राज्य आय से आप क्या समझते हैं ? इसकी गणना कब शुरू की गई ? आर्थिक क्रियाओं को कितने भागों में बांटा गया है ?
2. (अ) हिमाचल प्रदेश की राज्य आय पर एक नोट लिखो।
(ब) प्रति व्यक्ति आय से आप क्या समझते हो ? हिमाचल की प्रति व्यक्ति आय कितनी है ? इसमें कितनी दर से वृद्धि हो रही है ? व्याख्या करो।
3. राज्य आय में विभिन्न क्षेत्रों के अंशदान पर प्रकाश डालिये।

लघु उत्तर प्रश्न

1. राज्य आय की गणना कैसे की जाती है ? स्पष्ट करो।
2. हिमाचल प्रदेश की राज्य आय का प्रतिशत घटता-बढ़ता क्यों रहता है ?
3. द्वितीय क्षेत्र की क्रियाओं के नाम बताते हुए राज्य आय में इनका अंश बताओ।
4. हिमाचल की अन्य राज्यों से प्रति व्यक्ति आय के बारे में तुलना कीजिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

रिक्त स्थान भरो :

- (i) राज्य आय की गणना निदेशालय करता है।
- (ii) 80-90 के दशक में राज्य की प्रतिशत दर रही है।
- (iii) हिमाचल की प्रति व्यक्ति आय रुपये है।
- (iv) प्राथमिक क्षेत्र का अंशदान लगातार कम हो रहा है।

सही (✓) व गलत (×) के चिन्ह लगाओ।

- (i) कृषि द्वितीयक श्रेणी की आर्थिक क्रिया है।
- (ii) राज्य आय में विकास की दर लगातार कम हो रही है।
- (iii) हिमाचल में प्रति व्यक्ति आय भारत के औसत से अधिक है।
- (iv) आधार वर्ष हमेशा से एक ही रहा है।

